हम्दे ख़ुदा और नाते रसूल (स०)

बिन्ते ज़हरा नक़वी नदल हिन्दी साहेबा

हम्दे ख़ुदा किया करो इसमें बड़ा सवाब है। नाते नबी (स०) पढ़ा करो इसमें बड़ा सवाब है।।
उलफते आले फातिमा (स०) अज्रे रसूले (स०) पाक है। अज्रे नबी (स०) अदा करो इसमें बड़ा सवाब है।।
सबसे बड़े रसूल (स०) हैं सबसे बड़े इमाम (अ०) हैं। उनकी बहुत सना करो इसमें बड़ा सवाब है।।
अपने ही वास्ते दुआ करने में क्या भलाई है। सबके लिए दुआ करो इसमें बड़ा सवाब है।।
सच्चे बनो यही तो है उलफते सादिक़े (अ०) नबी (स०)। झूठ से बस बचा करो इसमें बड़ा सवाब है।।
झूठों से मुँह को मोड़ लो सच्चों के साथ चल पड़ो। सच है किधर पता करो इसमें बड़ा सवाब है।।
मुल्ला है हक़ बयानी से आज नदा जो मुन्हरिफ। इसके लिए दुआ करो इसमें बड़ा सवाब है।।

मदीह इमाम हसन असकरी (अ०)

रसाई दीदओ दिल की इमामे असकरी (अ०) तक है। हमारा राब्ता बस रौशनी से रौशनी तक है।।
विलाए असकरी (अ०) पर मरने वाले जी रहते हैं। इसी मर जाने पर क़ुर्बान ख़ुद से ज़िन्दगी तक।।
रहे नेअ्मात ही मज़हब मेरा है सच में कहती हूँ। तगो दू अपनी ऐ मौला(अ०)! तुम्हारी ही गली तक है।।
तवातुर से वही हीरों की बोसा गाह बनती है। रसाई जिस जबीं की उस गली की कंकरी तक है।।
वही अल्लाह वाला है वही अहमद को प्यारा है। कि जिसका सिलसिला यारो! दरे आले नबी तक है।।
वही अफराद मालूमात की दुनिया में जीते हैं। कि जिनकी आमदो शुद इल्म की बारहदरी तक है।।
मुहिब्बे असकरी (अ०) दावे से कहती हूँ बेहेश्ती हैं। वही दावा जो पहले था वही दावा अभी तक है।।
अता ख़ालिक़ ने की है ताक़ते ''कुन'' मेरे मौला को।। अदू की रफ़्तअे परवाज़ बस जादूगरी तक है।।
दुआ होते ही लो बग़दाद जल–थल होता जाता है। निज़ामे अब्तरी सारे का सारा अब तरी तक है।।
जो कल बेकल थे अब शदाब हैं बाराने रहमत से। पहुँच अस्वाते ज़िन्दाबाद की दरया दिली तक है।।
नदाए आले (अ०) अहमद (स०) को निदाए आसमानी है। असर मिद्हत का तेरी सुन! दिल इब्ने अली (अ०) तक है।।